**ओ३म्**

**-सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री का आर्यसमाज देहरादून में वेद प्रवचन-**

**“भाषा परमात्मा की देन है। सृष्टि के आरम्भ काल में परमात्मा से ही मनुष्यों को भाषा मिली। वेदों के वर्तमान स्वरूप का सम्पादन ऋषि वेदव्यास के समय में उनके द्वारा हुआ। वेदों में धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करने की सहमति दी गई है।”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज धामावाला देहरादून के 138 वें वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए आर्यजगत के शीर्ष विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि किसी भी धार्मिक या सामाजिक संस्था के लिए उसके सिद्धान्त, नैतिक मूल्य और कर्मकाण्ड मुख्य होते हैं। हमें इसका ज्ञान होना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि इस दृष्टि से वेद और आर्यसमाज संसार में सर्वश्रेष्ठ संस्था व संगठन है। वेदों के सिद्धान्तों पर दृष्टि डाले तो यह सभी संस्थाओं के सिद्धान्तों में सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि आधुनिक युग में वेद के यथार्थ महत्व को ऋषि दयानन्द ने ही समझा और समझाया था। आचार्य जी ने कहा कि ब्रह्माण्ड का लघु रूप पिण्ड में है। पुरुष सूक्त के 3 मंत्रों का उन्होंने पाठ सुनाया। आचार्य जी ने कहा कि ब्रह्माण्ड की व्यवस्था का लघुरूप पृथिवी पर दिखाई देता है। ईश्वर ने सूर्य और मनुष्य आदि प्राणियों की आंखों को बनाया है। पृथिवी पर परमात्मा ने प्राणियों को आंखे बनाकर दी तो उन्हें सार्थकता प्रदान करने के लिए ब्रह्माण्ड में सूर्य की उत्पत्ति भी की। उन्होंने कहा कि अंधकार में हमारी आंखे काम नहीं करती। शब्द उच्चारित करने व उसे सुनने के लिए आकाश चाहिये। आकाश में उत्पन्न शब्द को हम अपने कानों से सुनते हैं। रसना अर्थात् जिह्वा का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि यदि जल न होता तो हम रस का अनुभव नहीं कर सकते थे।

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि वाक् इन्द्रिय कर्म इन्द्रिय है। आपने कहा कि माता-पिता और समाज के सभी लोग बोलचाल की ही भाषा बोलते हैं। बच्चे अपने अपने माता-पिता की भाषा बोलते है। वह वो भाषा भी बोलते हैं जिसे वह अपने विद्यालय में सीखते हैं। उन्होंने कहा कि यदि कोई बच्चा एकान्त में रहे और वह किसी भाषा का एक भी शब्द न सुने तो वह बोल नहीं सकता। वाक् इन्द्रिय वा वाक् शक्ति तो उसमें है परन्तु बिना सुने भाषा सीख नहीं सकता और न ही बोल सकता है। विद्वान वक्ता ने कहा कि सृष्टि के आदि काल से मनुष्य भाषा बोल रहा है। उन्होंने श्रोताओं से प्रश्न किया कि क्या मनुष्य आदि काल से गूंगा था? सृष्टि की आदि में माता-पिता और विद्यालय तो थे ही नहीं, तब उसने भाषा कहां से प्राप्त की? उन्होंने फिर प्रश्न किया कि सृष्टि के आरम्भ काल में मनुष्य क्या 5-10 व अधिक वर्षों तक चुप वा मौन रहा? आचार्य जी ने कहा कि वह चुप रहा यह उत्तर ठीक नहीं है। इसके बाद आचार्य जी ने डारविन के विकासवाद की चर्चा की। उन्होंने कहा कि विकासवाद के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के करोड़ों वर्ष बाद मनुष्य का शरीर अस्तित्व में आया और उसके भी सैकड़ों वर्षों बाद मनुष्यों को बोलना आया। उन्होंने प्रश्न उपस्थित किया कि मनुष्य ने अर्थयुक्त शब्दों को बोलना कैसे आरम्भ किया? आचार्य जी ने कहा कि विकासवादी कहते हैं मनुष्य ने कव्वों को बोलते देखा तो उससे उसने क अक्षर सीखा। इसी प्रकार से देख व सुन कर अन्य अक्षर व शब्दों को जाना। उन्होंने बताया कि एक बार यूरोप में भाषा विषय को लेकर एक विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में विचार किया गया कि भाषा कैसे उत्पन्न हुई? सम्मेलन ने एक मत से निर्णय किया कि हम यह निर्णय करने में समर्थ नहीं है कि भाषा कैसे उत्पन्न हुई। सम्मेलन में यह स्वीकार किया गया कि हम केवल प्रचलित व उत्पन्न भाषाओं के विभिन्न पहलुओं पर ही विचार कर सकते हैं। विद्वान आचार्य डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने बताया कि आध्यात्मवादियों का विचार है कि भाषा परमात्मा की देन है व उससे सृष्टि काल के आरम्भ में यह मनुष्यों को मिली है। उन्होंने आगे कहा कि भाषा सूर्य की भांति अपौरुषेय है। उन्होंने कहा कि भाषा बोलने के लिए सभी शब्द परमात्मा ने दिये हैं। उसी प्रकार जैसे परमात्मा ने आंखे बनाने से पहले सूर्य की उत्पत्ति कर उसका प्रकाश हमें दिया। आचार्य जी ने कहा कि यदि सूर्य व उसका प्रकाश न होता तो मनुष्य अन्धकार होने के कारण आंखे रखते हुए भी देख न पाता। आंखों को सार्थकता प्रदान करने के लिए ही मनुष्य की उत्पत्ति से पूर्व परमात्मा ने अनेक प्रयोजनों के लिए सूर्य को बनाया है।

आचार्य जी ने सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान की चर्चा की और कहा कि वेदों में गंगा, अयोध्या व ऐसे जितने शब्द आये हैं उनका सम्बन्ध वर्तमान की गंगा नदी व अयोध्या नगरी से नहीं है। वेद के इन शब्दों का यौगिक अर्थ होता है। भाषा विज्ञान के अनुसार जिन पदार्थों जैसे गुण हों, उसके अनुरूप उनका नाम होता है। ऐसे शब्द यौगिक होते हैं। आचार्य जी ने कहा कि वेदों के बीस हजार से अधिक मंत्र ऋषि, देवता, छन्द और स्वरों से युक्त हैं। उन्होंने बताया कि अलग अलग सूक्तों के अलग अलग ऋषि और देवता हैं। उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात यह बताई कि महाभारतकालीन ऋषि वेदव्यास के समय में उनके द्वारा सभी मन्त्रों के ऋषि व देवताओं को अन्तिम रूप से व्यस्थित किया गया। आचार्य जी ने कहा कि आज हमें जो वेद प्राप्त हैं ऋषि वेदव्यास जी उसके सम्पादक हैं। उन्होंने बताया कि वेदों में आये ऋषियों के नामों में से किसी ऋषि ने यह नहीं कहा कि वेद अथवा किसी एक वेदमंत्र की रचना उसने की है। आचार्य जी ने कहा कि श्वांस का लेना व छोड़ना अपने आप होता है। इसके लिए हमें प्रयत्न नहीं करना होता। श्वांस प्रश्वांस की भांति परमात्मा ने सृष्टि की आदि में चार वेदों का ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया। आचार्य जी ने महाभारतकाल के बाद रचे गये ग्रन्थ जन्दावस्था की चर्चा के साथ इसके आचार्य जरदुस्त और बाद में हुए अन्य आचार्यों मूसा, ईसा व मुहम्मद आदि की चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि परमात्मा का ज्ञान त्रिकाल बाधित होता है जैसे की सूर्य, चन्द्र व पृथिवी हैं।

आचार्य जी ने पुराणों की चर्चा आरम्भ करते हुए कहा कि यह कहा जाता है कि कलयुग में तो भागवत की कथा का श्रवण ही कल्याण प्रदान कराने वाला होता है। आचार्य जी ने इस पौराणिक मान्यता पर प्रकाश डाला और अनेक युक्तियों व प्रमाणों से इस मान्यता का खण्डन किया। आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि वेदों ने भागवत, रामायण व गीता आदि ग्रन्थों के अध्ययन व कथा सुनने की प्रेरणा नहीं की। आजकल के पौराणिक विद्वान ऐसा करने की वकालत करते हैं जो कि अनुचित है। आचार्य जी ने कहा कि बाईबिल, कुरान, गुरु ग्रंथ साहब सहित रामायण, महाभारत व पुराण सभी मनुष्यकृत रचनायें हैं। इनकी रचना ईश्वर से नहीं हुई है। वेद के अतिरिक्त संसार के सभी ग्रन्थ जिनका अध्ययन व पठन पाठन किया जाता है वह सभी ग्रन्थ बाद में बने हैं परन्तु वह जिस भाषा में हैं वह भाषा उन ग्रन्थों की रचना से पहले से विद्यमान है। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ईसाईयों के धर्म ग्रन्थ बाइबल की रचना से पूर्व हिब्रू भाषा विद्यमान थी। इस्लाम के धर्म ग्रन्थ कुरान की रचना से पूर्व अरबी भाषा प्रचलन में थी और ग्रन्थ भाषा की उत्पत्ति व प्रचलन के बाद रचा गया। गीता की रचना से पहले इसकी भाषा संस्कृत विद्यमान थी। महात्मा बुद्ध के उपदेश ग्रन्थ त्रिपटक से पूर्व इसकी पाली भाषा विद्यमान थी। वेद ग्रन्थ के प्रादुर्भाव से पूर्व वेद की भाषा वैदिक भाषा का एक भी शब्द उपलब्ध नहीं होता। वेद के प्रादुर्भाव से पूर्व किसी भाषा के ग्रन्थ का एक पन्ना भी उपलब्ध नहीं होता। वेद की भाषा संसार के प्रथम शब्द व प्रथम भाषा है। आचार्य जी ने कहा कि वेद विशेष ग्रन्थ हैं। यह ऐसे विशेष ग्रन्थ है जैसा संसार का कोई ग्रन्थ नहीं है। आचार्य जी ने पहाड़ी नदियों का उदाहरण देते हुए कहा कि उसके बड़े बड़े पत्थर बहाव में बहते हुए नदी में उलटते पलटते व घिसकर गोल मटोल हो जाते हैं। आचार्य जी ने कहा कि संसार में शब्दों के बिगड़ने का इतिहास है परन्तु वेद शब्दों का ऐसा इतिहास नहीं कि वह इनसे पूर्व के किन्हीं शब्दों के बिगाड़ व सुधार से बने हों। आचार्य जी ने वेद व संस्कृत के मातृ, पितृ आदि शब्दों के अन्य भाषाओं में किंचित भेद व परिवर्तनों के साथ जाने की बात कही और अनेक भाषाओं में गये शब्दों का उच्चारण किया जो कि मातृ व पितृ शब्दों से मिलते जुलते हैं। विद्वान आचर्य जी ने अंग्रेजी के कंनहीजमत शब्द में ही अंग्रेजी अक्षरों का उल्लेख किया और कहा कि उन्होंने एक अंग्रेजी के प्रोफेसर से पूछा कि इसकी ध्वनि को शब्दोच्चार में सम्मिलित क्यों नहीं किया जाता तो उसने उत्तर दिया कि वह नहीं जानता और न इस बारे में किसी अंग्रेजी के विद्वान को इसका पता है। आचार्य जी ने कहा कि डाटर शब्द अंग्रेजी का मूल शब्द नहीं है, यह इस भाषा में अन्य भाषा से आया है। इसका पूरा विवरण भी आचार्य जी ने श्रोताओं को बताया। आचार्य जी ने इस सबके आधार पर कहा कि संसार में मनुष्यों को भाषा ईश्वर से प्राप्त हुई है। मनुष्यों ने भाषा का सृजन व आविष्कार नहीं किया है। ईश्वरीय ज्ञान वेद से सारे संसार में पहले वेद भाषा प्रचलित हुई और इसके बाद वैदिक भाषा के शब्दों के विकारों व अपभ्रंशों से अनेक भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने कहा कि वेदों से हमें जो भाषा सबसे पहले मिली वह वैदिक संस्कृत थी और यही संसार की आदि भाषा है। आचार्य जी ने कहा कि अन्य धर्म ग्रन्थों की तरह वेद इससे पूर्व की किसी प्रचलित भाषा में नहीं आये व रचे गये। वेदों के आने पर ही विश्व की पहली भाषा वैदिक भाषा का प्रादुर्भाव हुआ।

आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने कहा कि वेद मनुष्यों के लिए दिए गये हैं। वेद मनुष्य जीवन की सम्पूर्ण उन्नति करने में समर्थ हैं। वेदों में सभी प्रकार की विद्यायें बीज रूप में विद्यमान है। विद्वान आचार्य जी ने बताया कि वेद में परमात्मा का उतना ज्ञान व विज्ञान विद्यमान है जितना मानव के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वेदों में सारी विद्यायें मूल रूप में पायी जाती हैं। डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने पूरे प्रमाणिक स्वर से कहा कि संसार में वेद के समान ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं है जिसमें सभी विद्यायें मूल रूप में विद्यमान हों। अपनी इस बात को उन्होंने विस्तार से सभी श्रोताओं को समझाया। आचार्य जी कहा कि वेद में मनुष्यों के लिए उपयोगी सारी विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों के ज्ञान से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। वेदों के विद्वान आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि वेदों में धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करने की सहमति दी गई है। उन्होंने आगे कहा कि कि विश्व बन्धुत्व वेद की नैतिक शिक्षाओं के प्रचार, प्रसार तथा आचरण के द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है। वेद को आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने विश्व में नैतिक मूल्यों का उपदेश देने वाला सर्वप्रथम ग्रन्थ सिद्ध किया। उन्होंने कहा कि काल की सीमा से परे गुरुओं का भी गुरु परमेश्वर है। आचार्य जी ने कहा कि काम, क्रोध व लोभ ये पतन के 3 द्वार हैं। आचार्य जी ने कहा कि वेद भाषा की मनुष्यों द्वारा रचना नहीं होती अपितु प्रथम ईश्वर व उसके बाद वेदर्षियों द्वारा उसका प्रादुर्भाव व प्रचार होता है। वेदों में मनुष्यों के लिए उपयोगी सभी शिक्षायें विद्यमान हैं। वेद अनेक विद्याओं के आकर ग्रन्थ हैं। वेद नैतिक मूल्यों का आदि स्रोत है। इसके पालन से सारी दुनिया स्वर्ग बन सकती है। इसी के साथ आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने अपनी वाणी को विराम दिया। आर्यसमाज धामावाला देहरादून के प्रधान डा. महेश कुमार शर्मा ने आचार्य जी के वैदुष्यपूर्ण व्याख्यान की भूरिशः प्रशंसा की और उनका धन्यवाद किया। व्याख्यान से पूर्व बिजनौर से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री जी के प्रेरणादायक भजन भी हुए। शान्ति पाठ के साथ उत्सव के सत्र का अवसान किया गया। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**